





शंकर

रूपान्तर

पृथ्वीनाथ शास्त्री, रघुवीर सहाय

राधाकृष्ण प्रकाशन



३०६०

© १९६४  
मणिशंकर मुखर्जी

मूल्य  
सात रुपये

पहला सम्पूर्ण अनुवाद

प्रकाशक  
श्री ओमप्रकाश  
राधाकृष्ण प्रकाशन  
४ १४ रूपनगर  
दिल्ली ७

मुद्रक  
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस  
क्वीन्स रोड  
दिल्ली १



मसार परिजमा के पय मे कितना विचित्र सचय दिन प्रतिदिन होता रहता है। जो एक दिन अपरिचित रहता है, अज्ञान रहता है, वही एक दिन परिचित और नात हा जाता है। वही अपरिचित का घूँघट खालकर मन के द्वारा फिर उपलब्ध होता है। इस सचय की पूजा कभी-न कभी भारी हो उठती है और तभी स्मृति गगन में रग फूट पड़ते हैं।

घटनाचक्र-बस आल्ड पास्ट आफिम स्ट्रीट के अदालती कायक्षेत्र में मुझे भा एक दिन अमम्य अपरिचित चरित्रा के माश्वान सम्पक में आना पड़ा था। तब अजनबी को पहचानना और अज्ञान को जानना मेरी जीविका का अनिवार्य अंग था। अब इतने दिन बीत जाने पर अब्ज्मात एक दिन एक ऐसी टेर मुनी कि मेरा आकाश रंग से चित्र विचित्र हो उठा।

न जान कर, अपने आप, अनजाने ही, मैं उन अजनबिया को मन ही मन प्यार भी करन लगा था। यह ठीक है कि कानून के साथ साहित्य का विशेष मधुर सम्बन्ध नहीं है—कम से कम यह ता कहा ही जा सकता है कि साहित्य के कमल-चन में कानूनी कलरव ठाक-ठीक जलि गुजन-सा नहीं लगता। किन्तु इस ग्रन्थ में मैंने कानून नहीं आन दिया है। आल्ड पोस्ट आफिम स्ट्रीट में जिन आदमिया का एक दिन चाहा था, उही को आज लिपिबद्ध करने की चेष्टा की है, और कुछ नहीं।

—गकर

दिवगत  
नोएल फ्रेडरिक बारपेल महोदय  
की पवित्र स्मृति  
को समर्पित !

कत भजाना रे जानाइले तुमि  
 कत घरे दिते ठाई ।  
 दूर के करिले निकट बन्धु,  
 पर के करिले भाई ।

कितने भनजान  
 व्यक्तियो से तुमने मुझे परिचित कराया,  
 और कितने घरों में  
 मुझे स्थान दिलाया ।  
 जो दूर थे उन्हें बन्धुरूप में  
 निकट ला दिया  
 और कितने परायों को  
 भाई बना दिया ।

रबीन्द्रनाथ ठाकुर





“यही है हाईकोट ?”

सविस्मय, हाईकोट की सर्वोच्च मीनार की ओर ताकते हुए मैंने सोचा—क्या इसी का नाम हाईकोट है ! विभूतिदा की आर देखा । उनका सट्टार ही तो यहाँ आया हूँ । नौकरी मिलेगी जार ऐसी वैसी नहीं, जग्रेज बरिस्टर की नौकरी ।

इसके पहले तो राह पर छाटी मोटी चीजें नकर फेरी लगाता रहा हूँ । किन्तु “यापारे वसते लक्ष्मी का मन जी जान से जपकर भी जन्म जिन्दगी बिताना मुश्किल लिखाई पड़ रहा था तभी लक्ष्मी की वहन सरस्वती ने अप्रत्याशित ही कृपा की । सुस्ट रोड स्थित विवेकानन्द स्कूल की मास्टरी मैं शायद हरगिज न जुटा पाता, अगर उस स्कूल के थर्डेय हेडमास्टर साहब मरे वजह सकट के जानकार न होते । मास्टरी माने अग्रेजी और गणित की मास्टरी नहीं । मास्टर-समाज में अग्रेजी और गणित के मास्टर तो होते हैं कुसीन और बाकी सब होते हैं हरफनमौला । मैं इन्हीं में था । भूगोल, इतिहास, विज्ञान स्वास्थ्य बगला, संस्कृत कोई भी विषय पढ़ाने में नहीं छटा । वहाँ से सीधा चला जा रहा हूँ—रामवृष्णपुर घाट और होरमिल कम्पनी के अम्बा स्टीमर से नदी पार कर—हाईकोट ।

होइकोट की मीनार की ओर फिर एक बार देखा । बच्चों की नाक जसी तब चौटी मानो बादलों के आवरण को भेदकर आकाश से मिल जाना चाहती हो । मेरी हालत देखकर विभूतिदा हँसकर बोल उठे, गेवार की हाइकोट दिखाने में यही होता है । जरे जब रोज यही आना पड़ेगा तब यह मीनार ही नहीं, इस भवन का अंदर भी बहुत कुछ देख और जान सकागे । अब चम्बर चला ।”

यह बहुत दिन पहले की बात है । आज मगम रहा हूँ कि विभूतिदा ठीक ही कहते थे । ओड पोस्ट आफिस स्ट्रीट और उसी के पास दम



अभ्रवण ताल प्रागाम्य म श्रीवन नायक के जितने ही दस्य दिन रात चलते रहे हैं। बिजली ने बड़ी मान इस जगह खच करने से गान व जमा खाने में रोकट बहुत बढ गई है। जितना दया है उसमें से कितना कम आज याद रह गया है। फिर भी न जाने किने विविध चेहरा की तमबीरों याद के कोठे में आज भी मजी है।

विभूतिना बोले 'साहब लोग अब्बर मिजाजी होते हैं, सविन य साहब दूसरी तरह के हैं, बिलकुल दूसरी तरह के आत्मी, कोई डर नहीं। पहले पहल घाड़ी-सी दिक्कत होगी, धीरे धीरे सब ठीक हो जाएगा।

“चेम्बर किस कहते हैं ?”

साहब लोग जहाँ बैठते हैं वह जा मायन का पीला मकान है न।

इतनी दर बाग मरी निगाह उधर गई। यह मकान और नाम टेम्पल चेम्बर। कितना पुगना था, नहीं कह सकता। ओल्ड पोस्ट जापिरा स्ट्रीट के एक ओर है टेम्पल चेम्बर दूसरी ओर हार्डवाट।

टेम्पल चेम्बर के प्रवेश पथ में ही दोवार पर बहुत-से डाक के बक्से। कोई चक्काचक गया, तो बाई ईस्ट इंडिया कंपनी के जमाने से ही साज सिगार-शीन, पट हाल रास्ते के एक ओर बठा—डाकिया की पतीक्षा में भग्न।

सब बड़ी इमारत। सविन ठीक दर के छत जमी। एक एक बाठरी में एक एक एन्नों का अड्डा। बहुत सी बाठरियों में तो दिन दोपहरी में भी मूरज की रोगनी नगरत। इसीलिए ता कसबता इन्किटूक सप्लार्ड का व्यवसाय बढा है। दिन भर बत्ती जलाए तो भी यहाँ के विरायेतारों को गल गये तब दिया जलाये रखने में भी बाई कमी नहीं पड़ती।

लिफ्ट में अजीब-सी सौधी गंध। बाबा आदम के जमाने की लिफ्ट। तीन में ब्यादा यदि ऊपर जाने की जित करे तो गन्तम सब व-सत्र जप्त का मजा चूने लगे। लिफ्ट व अनेक आगेही ब्यू सगाय है। काता कोट पहने एन्नों और काता गाउन हाथ में लिये बरिस्टर। अधर्मला कुता पहने एन्नों का गावू (मुशीजी) और सफ़्त घोंती और माथे पर किरतानुमा कलाशतु की टोपी पहने माटा, चुल चुल मारवाड़ी—कोई पसेवाला भुवकिल। मरे टीक सामने हैं गरद का चादर ओले एक बगाली विधवा, कच्चे माने जता

रग, हाथ म हरिनामी भोनी । शायन् किसी जमाने की गहिणी कानूनी  
हिपाजत माँगने के लिए पूजा छाडकर एन्नीं आफिस की लिफ्ट व सामने  
साइन लगाए है ।

शतरजी प्याद की चाल में एक एक कदम मापन हुए हम भी अंत म  
लिफ्ट के अंदर घुम ही पडे । लिफ्टमैन ने एक बार निरछी नजर से ताका  
कुछ कहा नही । उम्र कुछ ख्याल नही लेकिन सिर के बाल सब सफेद ।  
विभूतिना ने भ्र से परिचय करा दिया, 'बहो भाई बुदावन, सत्र सत्र ठीक  
है न ? यह माहव के नय बाबू हैं ।' लिफ्ट हू-हू करती-सी ऊपर उठ रही है  
एक एक मजिल क्षणिक भाँकी-सी दिगाकर नीचे उतरी जा रही है ।  
बुदावन नदम बार मुझे अच्छी तरह म देखा किन्तु कुछ कहने स पहन ही  
लिफ्ट की मूठ घुमानी पडी । उतरने का समय आ गया ।

जेब से चाबी निकालकर विभूतिना ने दरवाजा खोला । बत्ती जला  
दी । एक बड़ा कमरा, बीच म पार्टींगन । सामने व छाटे-से हिस्स म एक  
मज, आलमारी और बाग़ज-पत्तर । "हम यहा बठने हैं ।" स्विगडार ठेलकर  
विभूतिना मुझे दूसरी ओर ले जाकर वाले साहब यहा बठते हैं । बडी  
मज, चारा आर बहुत-सी कुमिया । दूसर कोने म एक और छोटी सी मज ।  
तीनो ओर की दीवार रका से ढँकी और उनमें अनगिनती मांगी माटी  
कानूनी किताबें ।

"बत्तनी किताबें ।

अरे ये तो कुछ नही — विभूतिना न समझाया, यहाँ का बारबार  
ही किताबी है । नारखाने मजसे आरी-हथौडी हान हैं बग ही य भी वकालत  
के औजार हैं । और भी न जाने कितनी किताबा को जरूरत पडती है । एक  
बार जब लाइब्रेरी स जाऊँगा, तब सब देख लाग ।

साहब अभी आए नहीं थे । एक कुर्सी पर विभूतिना बठ गए । मुझम  
भी बठन को बहकर चारा ओर एन दद भरी नजर फकी, फिर अपनी कहानी  
गुरू की ।

सोनह साल पहल विभूतिना जब टेम्पल चेम्बर म आय थे तब उनकी  
उम्र बीस साल थी । पाच स्पण महीन पर टेम्पल चेम्बर म ही एक एटर्नी के  
आफिस म टाङ्गिस्ट थे । लिफ्ट म एक तगडे से अग्रेज बरिस्टर के साथ अवसर

मठभेड़ हा जाती थी तबिन विभूतिदा नयभीत गुमगुम से एक कान मगाये रहते थे। आफिम से बाहर जाते समय भी कई दिन इन्ही साहब से आँखें मिली फिर एक दिन यह सवाल भी पूछा गया 'क्या काम करते हो ?'

एक गनिवार का विभूतिदा दोपहर बाद डेढ़ बजे मगान बन्द कर रहे थे, तभी अकस्मात् बजरा न आकर बड़ा बगल बे बमरव बैरिस्टर साहब आपका बुलाते हैं।'

मेरा एक जरूरी टाइप का काम कर दोगे ? यही टाइपराइटर रता है।' साहब ने पूछा।

विभूतिदा राजी हो गए मन लगाकर टाइप कर रहे थे कि हटान सुनाई पड़ा, सतरा ग्राओम माई सन ? चौंकर दवा तो सामने साहब खड़े थे—हाथ में सतरा। विभूतिदा का बोली बन्द। ये कैसा साहब हैं ? मालिक लोग क्या सभी टाइपिस्ट के साथ सतरा बाँटकर गान हैं ?

काम-काज खत्म कर जाते समय साहब ने उनसे हाथ में एक पाँच रुपये का नाट थमा लिया तुम्हारा पारिश्रमिक।

'जी पर मेरे पास तो खुदरा नहीं है।

नहीं नहीं खुदरा की जरूरत नहीं पूरे पाँच रुपये ही तुम्हारे हैं।

विभूतिदा को यकीन न आया। डेढ़ घंटे में पाँच रुपये—यह तो उनकी महीने भर की तनकाह है।

छुट्टी के बाद सभी सभी तरीक़ों काम करने पर पाँच रुपये का नोट पाने लगा विभूतिदा। आखिरकार एक दिन साहब पूछ बैठे मर यहाँ काम करोगे ?

विभूतिदा पूछने ही राजी हो गए। इतना अच्छा मौका बोन छोड़ देता ?

किन्तु दो चार दिन काम करके ही विभूतिदा हाँफ उठे। बहुत श्याम मेहनत। दिन नहीं, रात नहीं सिर्फ काम काम। छुट्टी के दिन भी निस्तार नहीं, रात को साठ आठ बजे तक टाइप करी। ना बाबा यह नहीं चलेगा। साहब से कुछ बहे बिना ही विभूतिदा चम्पूर नहीं आया। पट्टा गप्पों आफिम ही अच्छा था। तबिन दो दिन के बाद ही टेम्पल चेम्बर के सामने विभूतिदा साहब के सामने पड़ गए। साहब ने हाथ पकड़ लिया,

‘तौकरी छोड़कर जाएगा कहा, ऊधमी लडके ?’ गमिन्दा से स्कूल से भाग लडके का तरह, साहब के पीछे पीछे विभूतिदा फिर चेम्बर लौट आए।

‘तब का आया, अब जा रहा हूँ। अब के बाद अब ये सोलह बरस लगातार बट गए। एक सम्झी साँस लेकर विभूतिदा न कहा।

‘न मातह माल में विभूतिदा ने साहब को पहचान लिया था।

साहब ने उह बुलाकर कहा, विभूति, तुम्हारे घर जाऊगा।

‘क्या कहते हैं आप ? हम लोग तो बड़ी गंदी जगह रहते हैं।’

उह सब भी जाऊगा।

साहब घर आए हैं। पहन है धोती-चादर—बगाली का घर बगाली बगलूपा में जाना चाहता था। धोती पहनना आमान नहीं। कमर में अटो लगी ही रहना नहीं चाहती। साहब ने ऊपर में पत्नी बांध रखा है। गति पुरी धोती गरद का कुर्ता और गिल्न की चादर।

‘अपनी माँ का दगान कराओ न।’

घबट लगाए विभूतिदा की माँ मापने लगी है। कह रही है, ‘लडक का आप ही के हाथों सीप दिया है।’

साहब फिर आए मा की बीमारी की खबर सुनी थी। किन्तु उनकी माँ की काली बाहुज्य की सँकरा गला में से ज़र किमी तरह विभूतिदा के दरवाज़े पर आकर रुकी तब तक सब समाप्त। अर्थात् आर मातमपुर्सी करने जाने लोग उमंग जाया घंटे पहले ही गली का मोड़ पार कर चुके थे। जाफिस में विभूतिदा का पट्टे, कंधे पर हाथ रखकर साहब ने दूसरी ओर मुह फिरा लिया। तुम्हारी मदद की वचन दिया था, आज से तुम लोगो की देख भाल का दायित्व मेरा है।’

और मा दिन बीते। विभूतिदा ने छोटे भाई बहन को स्कूल रात्रि में भर्ती करा दिया था नहीं, साहब ने पूछनाछ की। बहन की शादी में साहब भी शामिल हुए। पूछा ‘सब ठीक है न ?’

एक दिन फिर वाली बाहुज्य लेन में साहब गाड़ी में उतर। इस बार भी धाती-कुठा पहन थे। हाथों में फूला का गजरा था और चेहरे पर हँसी। विभूतिदा की शादी जो थी।

इस तरह न जाने कितने मौज पड़े कि विभूतिदा और साहब दोनों ही अपने बीच नौकर मालिक का सम्बन्ध भूल गए। मानो एक ही परिवार में रहते हों। एक ही ताग से दाना की जितनी बधी हों।

लकिन अब सोलह साल बाद विभूतिदा के मन में एक और डर बँठ गया था। बाल सम्बन्धन आदमी हैं। घर गिरस्ती का ताम्रित है। सामान्य व ता बाल सफर हो गए लकिन विभूतिदा व गामने अभी रहन-सो जितनी पड़ी है। सत्र सुनकर मानव ने भी हामी भरी— ठीक कहते ही पसतन सविग म यहाँ तो दोष है। अच्छा ठीक है।' कुछ महीने बाद ही यन्त्रव स्ट्रीट में साहब ने विभूतिदा के लिए एक और नौकरी जुग दी।

'यही साहब की मैं मतलबी दास्त की तरह छोड़कर जा रहा हूँ। किन्तु तुम इनका ऐगना। विभूतिदा की आगे भर आइ।

साहब की देवभाल रगोग तो ? विभूतिदा ने फिर पूछा।

छहरिण पहले दृष्टम्बू ता हो ने। साहब मुझ पसंद करेगा भी या नहीं यही गीर नदी अभी।

इसी समय बर्द अना की आवाज गुनाई दी।

'सामान्य आ रहे हैं। विभूतिदा ने कहा।

'मैं तो अग्रजी बोसन में हवलाता हूँ।

'कार् डर नहीं। सिर्फ गुड मानिग बजता। और फिर मैं तो मौजूद ही हूँ। किन्तु उत्तेजनावग ठीक समय पर भरे मर स गुड मानिग भी नहीं निकला। उल्टे साहब हो मुझसे 'गुड मानिग कहकर कमरे में अंदर आ गए। पीछे पीछे सामान्यवाद और दावानसिह दोनों बेअरे भी।

एक अग्रज व माय जिंदगी में यह मेरी पहली मुलाकात थी। छत्र पुट लम्बी गुलाबी देह इस उम्र में भी कमर और छाती सीधी करीब-करीब सारा सिर गजा सारे चेहरे पर बिखरी सी हमी।

विभूतिदा मुझ भीतर साहब की मजबूत व नज्जीव त जाकर बोले 'इसी तडके का वाकन कहा था मैंने।'

'आल राइ' काम-काज सत्र समझा लिया है न ?'

'नहीं जिना आपकी पहने लिया है ही

दाना आंग चमकाने तर दिवाते हुए वे बात, 'या तो ठीक कहते

हो। अभी मुझे कुछ मुश्किल सवाल, वे भी खास विलायती लहजे में, इससे पूछने हैं।”

ऐं।

विभूतिदा ने मेरी हालत ताड़ ली, बोले, “नहीं, नहीं साहब कुछ नहीं पूछेंगे। ऐसे ही मजाक कर रहे हैं।

साहब ने नाम पूछा। पूरा नाम सुनकर बोले ‘उँह, इतना बड़ा नाम मैं नहीं बोल सकूँ। एक छोटा-सा पोर्टेबल नाम चाहिए।’

आखें बंद कर साहब खुद सोचने लगे।

“अच्छा नाम रखना बहुत कठिन है। किंतु हूँ मिल गया—शहर। इस नाम में कोई उज्र है?”

जोरड पोस्ट ऑफिस स्ट्रीट के जीवन में उसी गिन भेरा असली नाम खो गया। अब मुझे उस नाम से कोई नहीं बुलाता। गुरानी बनारसी साड़ी की तरह वह विस्मृति की सद्बुद्धीम कहीं दबा पड़ा है, मैं खुद भी उसकी गोज खबर लेने की इच्छा नहीं करता।

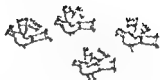
जब स घाबी का रिग निकालकर विभूतिदा ने मेरे हाथ पर रख दिया। “यह घर गिरस्ती अब आज में तुम्हारी। सब देना पारना ममकलो मुमसे।” विभूतिदा ने छोटे मोटे दो-तीन खातो का हिसाब किताब समझा दिया। चेम्बर में बहुत कुछ करना पड़ता है। किंतु वह सब तमश स्वयं ममक जाआगे। किसी ट्रेनिंग की ज़रूरत नहीं। जो सबसे ज्यादा काम आएगी वह दिवा एम० एन० दत्त के शाटहेण्ड स्कूल में सीख ही चुके हो। पोट में काम कम होने पर साहब बहुत भी चिट्ठी पत्री लिखाएंगे, उन्हें अच्छी तरह टाइप करना।

शाटहेण्ड से जो पहली चिट्ठी मैंने टाइप की थी वह आज भी याद है। साहब सूब धीरे धीरे ही बाले थे। आठ-नस साइन की चिट्ठी टाइप कर मेज पर रख जाने के कुछ घण बाद ही मोहनचंद आकर बोला, “साहब आपको बुला रहे हैं। भीतर आकर तिरछी नज़र से चिट्ठी की ओर ताका ता मेरे कान खड़े हो गए। दस साइनो में कम से-कम पंद्रह गलतियाँ, किंतु साहब ने कुछ भी नहीं कहा मुझमें।

चिट्ठी फिर टाइप कर उनक आग सरखा दी। इस बार हँसकर बोले,

“बाह, बहुत ठीक !”

ये चुप रह गया।



यह भी अन्धभुन सपास था। मर मातृ बलवत्ता हाईवात न पाप  
अन्तिम अग्नेज हरिष्टर ध, यह विभूतिदा न ही कहा था। मिर महा क्या,  
विभूतिदा न और भी बन्त-भी चाने बनाइ थीं।

मर भी हिम जमाने का बात है मुग्धम बाट की नीव पना सा न पाप  
न रगुर्वाग मर म। बादपात घाट न पाप ही बुद्ध जन्म-मातृदान पहा  
पहा न बलवत्ता की नमि न पधार। आ ग्रास विनायन न बगान मुक्त म  
आय उनक पधार ध मर इनाइता इम्प। रास्त म पस्तिवद्ध गगन दगा  
समागवीमा की भीड़ न्य न्य चौक उठे। बहुत म राग नग बन्त, नग  
पर। दूसर जका का जोर न्यकर न्य न कहा, ‘बन्त दायन है आप  
नाग इम न्य न्य नगा व नन पर न ता कपने हैं और न परा म जूत और  
जुराव। नकिन न्य एक छमाग म नी हगव का जना-जुराव पन्ना  
चाने।’

इसके बाद वितनी हा छमागिया निवन गइ। इस दग न नागा का  
जूता जुराव पहनान वाली आन इम्प साहज विनकुल मूल पा। जुराव ता  
दूर का बात है सबका पट भर जान का मा इन्नजाम न हुआ। न्य उम  
समय पुन तयार करन का ठका हासिन कगन के लिए हम्पिग के यन्  
दोड भाग म लगे थ। ममखरा न उनका नाम पुन बाँधन वाला इम्प रम  
लिया। महाराज नन्कुमार का फीमा पर लन्कावर पुन बाँधन वाल  
इम्प मातृ न इनिहाय म अपनी अन्धय कानि भा स्थापिन कर नी।

इम्प के पादे-पीछे ही विसायना मातृ का और एक ल हाजिर  
हुआ। मुग्धम बाट न आग-गाम उनक तन्म विछ गए। य एन्ती। य

वैरिस्टर। विलायत की कानूनी व्यवस्था को यहाँ चानू बरन जसा बोई उनका महान उद्देश्य था या नहीं, मैं नहीं जानता, 'गायद अथनाम म ही व बगाल पधार थ'। किन्तु धीरे धीरे उनका द्वारा एक महीषमी परम्परा स्थापित हो गई। वस्तुतः व 'बार का गौरव' की इतिहास यहाँ मान लगा।

उस उमान में कानूनी काम इतना सीधा नहीं था। 'गाय' का तब तक अनाम की सर्वोपनि भायना मजूर नहीं थी। 'जिमका बार उमका मुल्क', इसी का धारणा था। बार में मुरदमा चलाने में फायदा नहीं, बूबि मुकामा जीवन पर भी दूसरा पक्ष अनामत की राय नहीं मानता था। लाग महान जाटी हाथ में हान पर अनामत कसा? 'कानूनदा रान इसरी पुछ व्यवस्था ता कानी ही पड़ेगी। लोग यदि अनामत की हुकम उठानी बर दें ता काट रानन स लाभ ही गया हुआ ?

उस उमान के मशहूर माहिर भी कानून का अमान बरन में नदिस' लाग म पीछे नहीं रहन थे। माहिर नाम अपनी जूरत व मुताबिक दगी लोग म सिर्फ नेता धूनी ही नहीं, रमनम भी टम लम थे। अपन इलाक में ब मुद ही एक एक हिज हाईनम थे। अपन रग व मुनीव मुनील धारको या यह 'वाकी मिजाज दगार जज लोग भी जचमे म पड़ गा। रामचन्द्र बाहुय नामक एक मजूरन ने जर्जी दी, 'धमावतार विहार व अनेकजेंपर मकेंजा न सलाम हजार रुपय कज लिप थे बहुत पहल, लेकिन अब यह बाकी कजा नहा चुवाना चाहना।'

मुकदमा चला, विचार हुआ, मुनीम कोट ने डिप्री दी कि मकेंजी को बाकी रुपय देन पड़ेगे।

मैकजी माहव ऐसे-जैसे तो नहीं धन ! यह विहार के मजिस्ट्रेट थे। खबर सुनते ही बात इतनी बड़ा हिमाकत ? मेरे नाम पर जिन्दी ? एक भी पसा नहीं मिलेगा।'

मुनीम कोट व गेरिफ मैकेंजी का पक्कवर लान विहार पहुँचे। लेकिन रास्त में ही छापी माटी लड़ाई का बन्दावस्त हो गया। मैकेंजी माहव के दरख्ताज तीर-कमान डाल-तलवार और चट्टक लिप तयार थे। गेरिफ व दलखन पर जजये नाग मारा मारा बहुर टूट पड़े तब ता



जो जिधर जा सका, भागा ।

सुप्रीम कोर्ट भी धोड़नेवाला नहीं था । उसके सम्मान पर आघात था यह । अतः इस बार गेरिफ साहब पुरा एक फौज के साथ फिर बिहार भजे गए । जनरल उड और उनकी आर्मी जल्दगन पड़ने पर मक्केजी के साथ जम्मे की संधार थी । आखिरकार मक्केजी ने रामचन्द्र बाँडुज्य का पत्र खुला दिया ।

गारा भेजकर डिप्टी इजराय बगन की प्रथा बर्मा दिन नहीं चलानी पड़ी । लोग जमना समझ गए कि अदालत की बात मानने में नफा ही है मुकमान नहीं । रणधनसे खर-जमीन के मामला में आपस में लड़ी चलाना या हाथापाई करना छोड़कर वे कोर्ट आने लगे । देश में खून और मार पीट की सख्या काफी कम हो गई, लठता का व्यवसाय मंद पड़ा तो दूसरे उद्योगजीवी लठता का दल आ गया जो बानूनी लड़ाई लड़ने ही अपना शिल्पी बनाते हैं । विनायक ग अमर्यज्ज बरिस्टर और एटर्नी आनर बलकता की बानूनी दुनिया बर्मान में सन्धान देने लग ।

इसके बाद इतिहास के रथ का पहिया बितनी ही बार घूमा होगा । वहाँ गए वारेन हेस्टिंग्स और इलाहाबाद इम्प ? वहाँ गये बालबालिंग और बेनेजली ? अतः में जिरन राजपट बर्मा था वह फ्लैट इटिया बम्पनी भी नहीं रही । समय के आपात से एक दिन सुप्रीम कोर्ट का पुराना मकान भी बलपत्ता की छाती से मिट गया । नया हाईकोर्ट तयार हुआ आल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट के एक ओर । लेकिन पुरानी परम्परा के भात में वही बाधा नहीं पड़ी ।

गण्यमान बरिस्टर हाईकोर्ट में आए । विख्यात एटर्निया का भुण्ड आया । आल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट में सिर ऊंचा स्थि एक बिनात भवन सधा हो गया । टेम्पल चेम्बर, लिटनी चेम्बर । अनक मुकदमे, जनेन मुनक्जिल । एक सौ साल से यह बानूनी मुहाल आज भी आबाद है ।

यह मुहान भी अबीव जगह है बिभूतिदा ने कहा, मुक्किल, जज साहब, वकील बम्पिटर और एटर्नी के अनावा बिननी हो तरह के ताग आते-जाते हैं यहाँ ।"

'नायद घोडा बहुत जानते भी हो, लेकिन फिर भी बता दू । राम तीर



बुनाएंगे।

"वसा लग रहा है माई सन काई तबलाफ हा ता मुझ बताना। मैं बेस हान पर ही बोट जाना हू नही ता यही काम करता रहता हू।

मैं चुपचाप सड़ा रहता हू।

ऊह बोलत क्या नही नही बोलोम ता छोड़ूंगा नही। गान पहन दा चार गतिया सब करते है। जपजी भापा सरल नही है। साहब हम हेमकर रहत है।

अन्त म हिम्मत कर मैंन बानकीत गुरू तर दी, प्राप चीनासाझागी प्रपञ्ची म।

माहब उमी से गुन। कहते 'मेरा भरे भी मिर म बाग नहा रह गा है रिंतु मैं घूटा का बर्तास्त नग कर पाता। यगमन के साग ही मैं मन की चाने धोलता हू। ठीक है न, मिस्टर मोहनचौद ?

मोहनचौध बजरा होने पर भी मुझसे एक गी गनी अच्छी जपजी गमभता ह। वह वग म गमज पत्र सजात हुए साहब का पाता पर म म हमी दया जाता है धोना कुछ नही।

इनन बड बरिस्टर ललिन गिनु मुनभ मन। समय मिलता ता बहुत सा बातें करत। गिनु काम के समय बहुत ख्याल गजीला रहा। जाया पर चदमा गयाकर जब पुम्नसे पन्ने तत्र बोन यह कट सखता था कि य ही भरे साध मिर व गजेपन पर मप गप भी करत ह? काम व वक्त ता काई जाबाब भी नही सहेते। जिताय या बागज सामने सरवाने म थोड़ी नी दर हो जाए तो नाराज हो जात हैं। काम गतम हुआ नही रि फिर वही पन्त जम। पात बुलाकर बातें करत और पूछते, दस जानते हा, उस जानत हो? यकि कहना नही तो उमी समय सब सरखता से गमभा देने।

माहब एम्प्लेनड पर एक नामा गिरामी होटल म रहते थ। छुट्टी होत पर उनकी गाड़ी स रोड बहा जाता। चाय पीने के बाद कुछ आराम करने दा एक बिट्टी टाइप कर हाटन स निवत आता।

होटल नही मानो राजनवन था। करीब तीन सौ कमर हयि। और

जगर तमगे लग नीकर चाकरा का गिना जाए तो वहाँ मदुम गुमारी का दफनर ही खोलना पड़ेगा। अंग्रेज, फिरमी, अमरीकी, चीनी, जापानी आदि सब जातिया के इस मिलन-तीथ म बिहारी, बगाली और उडिया भी मौजद थे। किन्तु य लोग तो यहाँ पर केवल अल्पसंख्यक थे।

मेरी धारणा तो यही थी कि होटल माने जहा खाना मिले और जरूरत हो ता रहन की भी सुविधा हो। लेकिन रहने-खान की सुविधा की ता कोई परवाह ही न थी। काट-पट की जरूरत हो तो टेनरिंग डिपाटमट म एक स्लिप भेज दीजिए। सिनेमा ? दुमजिल के हॉल म चल जाइए। गिनमा देखकर नहान से पहले ही बाल या दाढ़ी बनवा सकते हैं। देशी नाद नहीं, खास चीन म समागत हुज्जाम।

यहा लज के बबन मद स्वर म बाग यंत्रों हैं गाम को चाप के यक्त भी, लेकिन भिन स्वर म। रात क डिनर क समय सिफ निरामिप बाजे ही नहीं बजते। काटिनट म मसहूर सिनेमा जार टी० वी० की मामल अप्सराएँ तब यहाँ रगमच पर उतर आती हैं। उनकी संगीतमयी भवार और नाच की रनभन से जाग-तुष पहले तो मुग्ध और बाद म मन्नमुग्ध होते दखे जाते हैं। मेरी दौड़ तो अपनी गली के माट पर खुले बिनादिनी बापे तज ही है वहाँ की जानकारी लेकर यहा जाने पर ऐमा जान पटा माना जबहसन के दरवार म हाजिर हुआ हू।

दरवाजा पार करत ही होटल म जदर घुसने पर पहली अनुभूति होती है—एयर-कंडीगनिंग मशीन की ठंडी हवा का एक भाका। इसके बाद जाँवे चकाचौंध करन वाला लाउज। बालीन से समूचे ठक फस पर कितन ही सोफ। पास म छोटा-छोटी तिपादया पर बिलायती, सचित्र पत्र पत्रि बाएँ। गाम क बाद ता नीवारा के बीच म छिपे नीले बल्ब या ट्यूब रोशन हाकर वहा एक धुधनी भी सपना की दुनिया हा रच दा हैं।

मेरा निगाह आजकल रात्र ही लाउज के कोने की ओर बठी एक महिला पर पडता है। महिला का बगमूया विचित्र सी है। साज सिंगार म जजब बगिच्छ है। अगर मुँह दूमरी जोर फिरा हा तो दह के दूमरे जगा को देखकर कौन कहेगा कि महिला की उम्र इसीस आईस से ब्याता है। किन्तु रात्रन और परिस के शृ गार प्रमाधन निर्माताओं को एक जबह तो हारना

ही पया ह। तरह-तरह के ब्यूटी प्रोडक्ट भनी भानि लगाय जान पर भी चेहरे पर उजड़ी जवानी के निगान डेक नहीं सत हैं। यह ममभन म ता निरत नहीं जाती कि बमल नहीं है किन्तु बानन का बिगर्द दन मात पहन हूइ या बास सात पहने यह मरी अगोड़ी औरों नहीं आच दान।

पोंछे गीवार पर अजन्ता गैला म गहुन्तला अजिन है। चित्र का पच्छ-भूमि म इतता हुआ मूरज और मगझीना के साथ मेलन म भूषा भटका-ना सभावत-बामिनी गहुन्तला। चास-याम पातल के टडा म रस भानि भानि के सना-यम। गहुन्तला के इस चित्र के साथ चहग उगास दिसे बड़ी महिला का दण्ड भुल मिल जाता है और भावा एक नई छवि सामन रिच जाता है।

हर गाम का दुमजित पर जान समय उमका दाना था। काम काम कर सौतत बन भी साउज गाली नहीं रहता। जवना बडा रहती मदी महिला, एक समा-मा बोये हुए।

एक नि एक साहज की यह भी कहन सुना साउज म सजाव के लिए अनेक मौममी फूला की तरह हाटन कम्पनी न गे भी जुग लिपा है भाई तिरु गतिहीन फूला और नरकीय म हा सारों का मन नहीं भरता।

महिला की साडी का रंग मा राङ बतना था—कभी लाल कभी हरा तो कभी गुलाबी। एक पर के ऊपर दूसरा पर रमरम माफा पर आराम स बड़ी हूइ धामनीजी एक के भुआ भी गूय म फेंकता रहना। बड़ी अनिच्छा के साथ यह भुआ जवसायी चाल से दूर का चित्रित मूगझीना की आर ब जाता। औरता के मह म भिगरट—बाह व किता भी देग का हा—मेरी आता को हमगा मटरनी है। लेकिन उसम मा क्या मरी सगती या सुनहरी धागियन भूती हिलाने की उसकी भगिया। होटल बामिनी गहुन्तला का छन्दो भग बस यी पर होना था।

कुछ नि बा साउज मे एक मुक्क भी दील पडा। उसकी उम चाबीन पचीस बरस के लगभग थी। उसकी खुली छत बानी सग्री मूक कार गट पर खड़ी रहती। दीवार पर अवा गहुन्तला को ओर पीठ करके वे दाना मसुर गुजा करन रहन। यह निराली बानबीत मानो किसी तरह मम ही नहा हा पानी। मुक्क बीतती, माक आनी रासना हो जाती किन्तु

यह मधुरालाप चलता ही रहता। पास में दो पीन के गिलास रखे रहते। उनमें कोल्ड ड्रिंक रहता या अगूरी, नहीं कह सकता। ज्यादा ज़रा अगूरी का ही है। वजह यह है कि मैं यही समझता था कि सतरे या नींव का शबत ही आदमी को ऐसा दुःखमुल बना सकता है।

होटल के बाहर घूमने समय भी कभी-कभी वही व्यूव गाड़ी खिंची पड़ती थी। डाइवर की जगह होता वह युवक और पास में बैठी होती यही महिला। आँखा पर नीला चश्मा लगाए।

य दोनों ही होटल के नौकर चाकरों की तरह तरह की रस भरी बातें के नायक-नायिका बन गए।

रिसेप्शनिस्ट गलन बास के साथ मेरी थोड़ी-सी जान पहचान थी। उसने एक दिन पूछा, 'पड की ऊँची डाल पर कबूतर कतूतरी वाला सीन देखा है?' पहले तो मेरी समझ में ही नहीं आया। समझा तो पूछा, 'ऊँची डाल कहा मिली?'

"उतना ही तो बाकी है, नहीं तो पेड पर चढ़कर नसनी हटा देने में भी कोई तरददुद नहीं होता।" ब्रोस ने हँसकर जवाब दिया।

लाउज का प्रणय-दृश्य साहब की नज़र से भी नहीं बचा। हार्डकोट से लौटकर एक दिन हम लोग लिफ्ट से ऊपर जा रहे थे। वे दोनों लाउज की रीगन कर रहे थे। मुह टेढ़ा कर साहब ने पूछा, 'लाउज में बाप भाजू हाथी घोडा मार्वा छोकर को देता है?' (भ्यूव कार का मालिक युवक हमें गाँव जमीन-गरीब जानकरा के छापा से छपी बुशट पहने रहता था।) साहब ने घोडा और भी मुह टेढ़ा कर कहा, 'छाकरा महिला को नानी बालकर न भी पुकारे तो मा जैसे नाम से तो बुला ही सकता है।

सचमुच इन दोनों की बमल उम्र आता म खटवती थी। उनका अगोपन प्रेमालाप भी गालीनता की हल् पार कर चुका था। साफ़ पर दोनों कबीर पाखला कम होते हात लोप हा गया। फुसफुसाकर बातें होती। महिला गाना यकी मानी सी अपना सिर बुगट पहने छावरे की आर गिरा देती। कभी-कभी एक-दूसरे हड़बड़ाकर अपनी जस्त-पस्त के भूषा ठीक कर लेती। उसके बाद हाथ में हाथ डाल दोनों बार की ओर जाते दीप पड़ते। अपना यह अनुचित कौतूहल दवान की मरगव कोशिश करने पर भी मैं

गफन नहीं हुआ। समय की लगाम पूरे जार में भींचकर रात पर भी हर बार दुमजिल पर जान समय नाउज की जार एक बार नजर फेंकन का सालच में कभी नहीं रात पाना था।

‘मम माह्य आपका बुला रही हैं।

साउज पार कर लिफ्ट में चढ़ने वाला नी था कि बाधा पड़ी। सामन यभरा सड़ा था। अचम्भे में साथ था। तुमने ‘गण्य’ गुलत समझा हागा। वह मुझे कभी नहीं बुला सकती।

यपरा मित्र नाचा किए बाता ‘जी आप हा का बुला रहा हैं।

बाध्य हाकर साउज का जार लौटता पडा। वह ‘गकुम्भरा’ की तमबीर के सामन हा बठा थी। सामन आकर सड़ा हा गया। ‘इतने नइगीक में पहन कभी नहा दसा था। दूर से जा इतना थटक ‘गियाइ दना थी पास आन पर वही तिनबुल निग्रम जान पड़ी। दाहिन हाथ की ‘जैगुनी का साल भनमलाया।

मिगरट का और भी सम्रा वग खाचकर महिला ने मेरा तरफ निगाह डाली। साहब का नाम लेकर पूछा कि क्या मैं उनका यहां काम करता हूँ? जय मिठास था आवाज में। बहुत-सी महिलाओं को ‘पगड़ी वालन मुना है लेकिन आवाज का ऐसा स्वर-संगीत बाना में प्राय कही नहीं पडा।

जवाब दिया हा।

आप क्या बहुत बिडी हैं?

बहा, ना ना आपकी बाइ मद कर सकू ता खुशी हागी।

मिगरट राखगानी में फेंककर महिला ने एक बार सावधानी से चारा आर ताका, फिर बहुत धार से कहा ‘दखिए मुझ पर एक बड़ा आपन आ गई है। आपका साहब के साथ मुलाक़ात करना बहुत जरूरी है। उनमें फव मिल सकती हूँ?

उस दिन ता मुलाक़ात हर तरह नापुमकिन थी। एक और बेस में साहब का व्यस्त रहना अनिवाय था उन उन्हें दूसरे दिन नाम की माह्य के कमर में आन को बहा दिया।

शाटहेण्ड की बाँपी लेकर मैं साहब के पास बठा हूँ। सामन की कुर्सी पर वही महिला है। गदन झुकाए पद्य की आर ताक रही हैं। ममका गायद शम लिहाज छोड़ नहीं पा रही हैं। साहब के होठा पर मुतकराहट देखी। पट्टली मुलाकात मे किसी भा मुवक्किल का सकोच हट नहीं पाता। टेम्पल चेम्बर म यह दश्य उनको अनेक बार देखना पडा है।

यथारीति परम्पर अभिवादन के बाद साहब ने कहा, “दखिए, डॉक्टर और वकील से राग छिपाना नहीं चाहिए। फिर मुझे दिखाकर कहा, ‘य मेरे स्टेनोग्राफर हैं। इनके सामने आप नि मबाच अपनी बात कह डालें।

‘ना ना यह ता ठीक ही है। पहले कमरे म चतुर्दिक जल्दी म निगाह फेंकी फिर एक रकबर टूटा पट्टी अंग्रेजी म महिला ने जबाब दिया, “एक दम गुरु से ही कहना जऊा होगा ?” वह फिर रकी।

बिलकुल।”

“यह एक बड़ी लम्बी कहानी ।”

“पहले अपना नाम बता दें स्नाप्रापर लिख लेगा।”

“नाम पीछे बताऊँगी, पहले आपबीती कहती हूँ ।”

उस दिन नाट्यक क बहृत-मे पान भर गए। मनमुग्न मा सुनता रहा मैं एक दुखदग्ध बलकित जावन का इतिहास।

बालत-बालत कभी उनका गला काप उठा, कभी दोना हाथा स मुह दबा लिया और कभी लज्जित हाकर भी अपना आवेग दबा न सकने क कारण वह फूट फूटकर रा पड़ी।

भारत नहीं लेवनाँन के इसाई परिवार म मेरियन स्टुअट का जन्म हुआ। पिता की याद नहीं, बहुत छोटी सी थी तभी मर गए, माँ ही सब-कुछ थी। बच्चों की पालन-पोसन के लिए मा का राजगार की तलाश म निकलना पडा और जसा प्राय होता है, वही जीविका मिली जो किसी भी समाज म किसी भी वक्न इज्जतदार नहीं मानी जाती। लेकिन लडकी को वह उम्मी रास्त पर नहीं आन देना चाहती थी। लडकी भी उनकी देखने सुनने म खराब नहा थी, इसी से उम्मीद थी कि अच्छा जमाई जरूर मिलेगा और वह निश्चित



हावर जिएंगी।

मेरियन की माँ ने लडका के लिए लडका दूढ़ा का काम जितना सज्ज नममा या, अमल म वह उतना महज नहीं था। लडकी के साथ घूमने और उसे मिनेमा या काफी म ल जानेवाले लडके या जवानों की कमी न थी किन्तु इसीनिष्ठ उनम स कोई मामला गादी का पगाम भेजेगा ममा म-टीमण्टन आइमा उस देग म नहीं जमा। इधर लडकी न तेर्स पार पर चौबीस म पैर बड़ाए। मज्जाति का घर जुगन की उम्मीद छोड़कर मेरियन की माँ ने परदेशी दुल्हा बूढ़ना ही ठीक नममा।

जत मे कण्टन हावड नामक अंग्रेजी सना क एक जवान का मेरियन की माँ न जमाई बना हा लिया। गादी के बाद साथद एक माल घुरा नहीं बीता। इस गहर स उस गहर हवाई अफसर पति क साथ मेरियन घूमती फिरती रही। कण्टन हावड प्यार स कहत मरी फौजम नौबरी कर मारी दुनिया म घूमा हूँ किन्तु कोई भी औरत मेरी जाखा म रग नहीं जमा मपी। जमाती भी कस ? मरा भाग्य तावधा था नेबनान की एक गनान लडकी के साथ।

बनावनी गुस्से स मेरियन मुह बिचका देती। 'बहुत दूरा इस तरह अपना कीमत और न बढाओ। तुम्हारे मुकाबले में कुछ भी नहीं हूँ, यह मैं जानती हूँ।' हावड के महावर हाथ को अपनी जोर खींचकर खलती रती बह।

दिन आराम से बटत गए। पति-गव से गौरवाचित जोरता के निष्ठ क्या कभी खराब हाते हैं ? हावड के आराम क लिए मेरियन मदा चिन्तित रहती। पति का हर काम नौकरा पर न छोड़कर बहुत-भा काम-काज वह स्वयं करती।

हावड कहता 'मुदही क्या इतना खटती हो ? जर एक नौकर रग लो।

“बकार खर्चा बजान से पायदा क्या ?”

निसम्बर क बीचागीच का तिन या। गूरज डूबने से कुछ ही पहल

गॉन में बैठकर वे दोनों चाय पी रहे थे। इसी समय कप्टन के नाम का एक तार आया। लिफाफा फाड़ कर तार पर एक नज़र फेंकी और उम माड़ कर जेब में रखा लिया हॉवर्ड ने।

हैंसी का पत्राचार रुक गया। कैप्टन गम्भीर हो गया था।

'क्या लिखा है? अम्बर काई बुरी छपर है?'

मेरियन ने जवदस्ती तार छीन लिया। बिलायन तबादल का हुक्म था।

'यह तो अच्छी हो गया है। मुझे तो इन्डियन अन्दा लगा। तुम देख लो।' लुसी से गुल पड़ी मेरियन।

लेकिन हॉवर्ड का चेहरा और भी कासा पड़ गया। बिना जवाब दिए ही कप्टन साहब दुर्र्मी छाड़कर अन्तर चन गए।

हॉवर्ड को परधानी का सख्त उम समय मेरियन का अज्ञात रहा लेकिन आहिर हात दर न लगा। मेरियन को पासपाट नहीं मिलेगा। कानून की निगाह में वह शादीशुदा औरत नहीं है। बाम्नाविक मिसेज हॉवर्ड पाँच बान-बच्चों का लेकर नॉटिणगहामर में घर गिरम्भी बसाए बैठा है।

पाँच पड़ी मेरियन। अच्छे में आकर हॉवर्ड का आर बहुत देर तक सावती रह गई, पर उमन कुछ कहा नहीं।

मल मुलावातिया ने मुभाया 'झूठा' ब'याग'। 'नैतान'। इसे आसानी में छाड़ नहीं देगा। अंग्रेजी कानून में एक औरत के मौजूद रहते दूसरी शादी करना जुम है। बटा न साच क्या रखा है? इन जेल भिजवाओ और साथ ही-साम अदालत में हज्जि का दावा कर दो।

लेकिन मेरियन राजी न हुई। जो भारी नुजसान हो गया, उसका मुआवजा कोई नहीं दे सकता। अदालती कारवाई से क्या हागा?

मेरियन के जीवन-नाटक में कप्टन हॉवर्ड ने बिदा ली। अब कप्टन की पत्नी के रूप में उमका परिचय नहा रहा, बहुत-से लोग पीठ-पछे उसे पला कैप्टन की पुरानी गलत भी बालत थे।

इधर लुधा-भूति भी दुक्क हो गई। लोणा का अन्दाज यही था कि काफी मान दियेगा बिना कैप्टन का छोड़न बाना औरत नहीं है मेरियन। अमल में उमन कुछ भी नहीं लिया था। हॉवर्ड का पैसा छून में भी उसे चिन नगी थी।

एक साल तक मरिग्यन जिस तरह काम चलाती रही, हम नहीं बताया। साहब ने पूछा भी नहीं। किन्तु उसका अदाज लगाने के लिए ऊंची कल्पना गविन की जरूरत नह।

अन्तर्जातीय विवाह के बारे में जानकारी रखनेवाले एक हितैषी मित्र ने मेरियन को इडिया जाने की सलाह दी। बोल, 'भाग्य मुह न मोड़ ले तो वहाँ पर कुछ-न-कुछ जुटा सकना मुश्किल नहीं होगा।

उस वक़्त भी भारतवर्ष का बिसा पाना बिलकुल आमान था, कम से-कम औरतों के लिए। बिसा देने से पहले देखा जाता है कि किस तरह की औरत है, पति दरियादिन है या नह। पति न रहे तो जीने रहने का बन्दोबस्त है या नहीं। जिस स्त्री का पति या जीने रहने का बन्दोबस्त नहीं भारतवर्ष में बिसा अधिकारी उसे स्वागतम नहने को अधिक उत्सुक नहीं। उनकी इच्छा हो तो भी कलकत्ता बम्बई या दिल्ली की सिक्योरिटी पुलिस राजी नहीं होती। ऐसी औरतों पर मजूर रखन में पुलिस के अफसर भी परेशान हो जात हैं।

पासपोर्ट आफिस का पहाड साँघकर, बिसा-आफिस का सागर पार कर मेरियन अन्त में किस तरह बम्बई जा पहुँची, यह न कहने से भी काम चलेगा। केवल इतना ही बहे देता हूँ कि बम्बई में इस मय आग-तुक का नाम मेरियन नहीं रहा, नया नाम था आभा स्टुअर्ट। बम्बई के विराट जन कानन में पहले तो वह किकत-य विमूढ हो उठी। नाजानकारी ने इस अपार सागर में कूद पडन के बाद अनुभव हुआ कि देग त्याग गलत था। किन्तु तब भी लड़ाई खत्म नह। हुई थी, अत दो एक रात के महमाना के साथ मिस आभा स्टुअर्ट ऐसी-यस्त हो उठी कि शादी कर घर बसाने की फ़िन करने का मौका ही नहीं मिला।

कुछ दिन बाद की बात है एक देशी पुरबिया राज्य के नवाब बम्बई में घूमने आए। राजा महाराजा कभी अकेले तो जाते नहीं। चार दोस्त, दीवान और नौकर-चाकर आदि परछाई की तरह उनका अनुसरण करत हैं।

ताज होटल की एक काफ़्टेल पार्टी में नवाब साहब के ए० टी० सी० के साथ आभा का परिचय हुआ। ए० डी० सी० बड़े मौजी जीव थे अत

वातचीत जमते ज्यादा दर नहीं लगी। नाट्युक म नई बाघवी का पता ठिकाना लिख गया।

आभा स्टुअट के घर पर अब उनकी पद घलि प्राय पढती। जबान ए० डी० सी० साहब ने लेबनान की सुदरी के बंदमो पर अपना दिल चडा दिया। उम्र म आभा थोड़ी ही बड़ी थी किंतु उससे क्या आता-जाता है। कुछ रक्वावटें पडती हैं, लेकिन और तरह की।

बड़ी कोशिश के बाद अपन नाखूनो की जार नजर डालते डालते कैप्टेन महीउद्दीन ने एक दिन कहा "आभा हम लाग तो मुसलमान हैं— बाप-बादो का मजहब है, इसका अलावा मुसलमानी राज म नौकरा भी है।"

'उससे क्या हुआ ? पहाट मुहम्मद के पास नहीं आया ता क्या मुहम्मद पहाड के पास नहीं जाएगा ? तुम मरे सर्वाधिक स्नेहास्प हो तुम्हारे लिए क्या मैं ईसाई स मुसलमान नहीं हो सकती ?' आभा के स्वर म भावावेश था।

बम्बई की एक मस्जिद म आभा स्टुअट का नया नाम क्या रखा गया यह नोटबुक म नहा लिखा। जब उतिसा था या मेहर उतिसा यह भी ठीक याद नहीं आता।

नई दुलहिन के साथ ए० डी० सी० अपन नयाब की राजधानी लौट आए। ए० डी० सी० का बगला क्या था, एक छोटा मान भली भाँति मुमज्जित महल कहिए। महीउद्दीन ने मुमकराकर कहा, "यह है आपकी मल्लिकयत बेगमी-साहबा, आज स यहां पर पूरी हुकूमत आपकी है।

नई बहू की लाजमरी हँसी स महाउद्दीन वृत्तकृत्य हो उठा। जाभा को भी नया साज-सरजाम बहुत अच्छा लगा। अच्छा नहीं लगगा ? यह ता उसकी अपनी दुनिया थी, न कि होटल म किराये का कमरा जिसम किन्नर नि रहगे, पता नहीं, इसलिए इच्छानुसार सजान से फायदा क्या ?

घर म ज्यादा काम-बाज नहीं था। सरकारी तनख्वाह पर अनेक नौकर थ। सेवा गुथ्रूपा क लिए दो दासियाँ भी हाग जोढे तनात थी। खाने के बाप दापहर के वक्त आभा महीउद्दीन का एलबम देखती। अनेक राजकीय उत्सवा म ए० डी० सी० के वेश म महीउद्दीन समसे पहले छात्र-जीवन —

महीउद्दीन। स्वामी व अनजान और बीते जीवन के ये चित्र आभा को पुल कित कर देते। शाम को नहा धोकर बट साज सिंगार करने बैठता। उसका वाद यत्नपूर्वक सजी-सवरी तबी जाईने क सामने आ खड़ी होती। कभी अबस्मात महीउद्दीन आ जाता तो वह विस्मित हा जाती। वह मुसकराकर कहता, 'लेबानान म साडी नही पहनते फिर भी साडी पहनने पर बितनी मुदर लगती हो तुम !'

कभी-कभी वह बाहर के वरामदम बेंत की चेअर पर बंठी बठी महीउद्दीन के इन्तजार म क्षण गिनती रहती। पास की चेअर सासी रखती। नयाबी महल से महीउद्दीन को लौटने म प्राय दर हो जाती। मुदर जावाना—एकदम स्वच्छ मानो किसी शिल्पी न चित्रावन स पहले अपना कवम धा पाछकर निमज बिया हो। उस निर्मेष आकाश म कमल तार उग आते मानो शिल्पी एक के बाद एक नई कूची लगाए जा रहा हो। नई दुलहिन क मानस पट पर भी चिन्ता के तारे उभरने लगते। एकाध नही बहुत-सी चिन्ताएँ। सजी-सवारी नही उलभी-मुनभी, अम्न व्यस्त। पक्तिबद्ध भाव करते हुए स य दल के समान नहा आती व साँझ होने पर घासला की ओर लौटता भुण्ड-की भुण्ड चिड़िया की तरह आती हैं। दो दिन पहल जो दुनिया बकार और बरहम जान पड़ती थी आज उसकी दूसरी शकल थी। शिन्गी म उसे तकलीफ हुई, यह ठीक है। लेकिन नई दुलहिन साचती एक घर पूककर अल्लाह ने दूसरा घर तो बना ही दिया।

महीउद्दीन ने अपनी गादी की बात नवाब म नही कही थी। वास्तव म कहने की हिम्मत ही नही पड़ी। किन्तु खबर फलते तो ज्यादा दर नही लगती। नवाब ने ए० डी० सी० को बुलवाया।

देखिए कष्टेन साहब गादी की ता खानदानी घर देखकर क्या नही की ?' नवाब महीउद्दीन स कहन गए अमरीकिया की जूठी औरत क साथ गादी करत हुए आपका गम नहा आइ ? जो हो गलती हर जादमा स हाती है। खानदानी घर की खूबसूरत औरत के साथ आपसी शानो का बदोवस्त मैं सुद कर दूंगा, इस डायन जामूस को आप फौरन रुपसत कर दें।'

महीउद्दीन ने नवाब साहब का समझाने की भरपूर कोशिश की, मरी

ओरत जासूस नहीं है बहुत अच्छी ओरत है, मकीन कीजिए ।'

नवाब ने सजीदगी से कहा 'आपसे कहा नहीं गया ! जगले अड्डतालीस घंटे में इस ओरत को स्टेट से बाहर निकालने के हुकमनाम पर आज ही मुबह मैंने दस्तखत किए हैं । अगर चाह तो आपका नाम भी उसी में दर्ज करा दूँ ।'

वेचार कपटन महीउद्दीन को गहरा सम्भा लगा । लेकिन इस दुनिया में सभी अप्टम एडवड या उनके भाव शिष्य चारदत्त आधारकर ('दृष्टि पात के नायक') नहीं हैं । महीउद्दीन ने सोचा, एक ओरत के जाने पर दूसरी ओरत मिल सकती है किन्तु एक नौकरी छूटने पर दूसरी नौकरी इस ज़माने में नहीं मिल सकती है ।

घर लौटकर महीउद्दीन ने बेगम साहबा को बुलाकर कहा, "डाकिंग आज तज़ीयन बहुत नागाद है । जाह ! कितने सपने देखे थे कि तुम्हारे साथ घर बसाकर रहूँगा लेकिन नवाब साहब ने सब मिटा दिया ।"

महीउद्दीन ने नवाब साहब के साथ हुई मुलाकात की कफियत दी । 'समझाने की बहुत कोशिश की पर कुछ नहीं हुआ ।' घट-सा पीकर फिर बोल, "किन्तु काफी साचा है, नौकरी छोड़ने से तो काम नहीं चलेंगा ।

बाडा ठहरकर लम्बा सास ली महीउद्दीन ने । डाकिंग वहीं भी रहो मर दिल पर तुक तार की तरह तुम ही मदा जगमगानी रहायी ।'

उस दिन रात को स्टेशन तक आने की हिम्मत नहीं पड़ी महीउद्दीन की । लेकिन नौकर द्वारा दो लिफाफे भेज थे । एक में वकील की एक बिट्टी थी

'महीउद्दीन, इसके द्वारा आपको आगाह करता हूँ कि मर मुबकिफल कपटन महीउद्दीन खान ने दो नामी-गरामी गवाहा के सामने पाक इस्नामी बालून के मुताबिक तीन दफे 'तलाक' बोलकर आपको तलाक दे दिया है ।

दूसरे लिफाफे में दस-दस के पचास नोट थे । साथ में एक टुकड़ा कागज । उस पर लिखा था 'राह-ग्वकव लिए भेज रहा हूँ ।'

इसके बाद वेद्व हुआ बलबत्ता । लेबनान की एक ओरत बनकता था पहुची । फिर भी उसकी आँखा में घर बसाने के सपने ही बस थे ।

बलात्ता की त्रिगुणी का लम्बा चौड़ा बयान देने सफायदा क्या ? हात्त ब लाउज से तो हम पहल से ही परिवर्तित हैं ।

इस समय दादी का एक पगाम मिला है । पाणि प्रार्थी जोर काइ नहा यह जगली-जानवर छाप कुत्ता पहननेवाला छोकरा है । छोकरे का पश्चिम आत था । सोचा था किसी मालदार व्यापारी का पथ भ्रष्ट लडका होगा । पता चला कि वह एक विख्यात दशरी राज्य का राजकुमार है । मान लीजिए कि, राज्य का नाम है चंद्रगढ़ ।

युवराज मुझसे गप्पी करना चाहते हैं आभा रकी । साज मरी नजरें जैची कर फिर उसन कहा मैं भी युवराज को चाहती हूँ ।

उसकी बात कुछ बेसुरी लगन पर भी उसके स्वर में अत्यन्त आत्म विश्वास तो था ही । जीवन के गल में जा बार बार धोखा खात और हार जाते हैं गायद भगवान उनको ही इतना मनोरत दत्त है ।

इतनी दूर तक एकटक सुन रहा था आभा स्टुअट की कहानी यकीन नहीं आता था कि सब है । अच्छी तरह उसके चेहरे की ओर फिर देखा । मताई हुई लडकी के चेहरे पर जो नम आभा रहती है वही उसके सारे चेहरे पर बिखरी हुई थी । मानो वादना की आठ स सूर्य कुछ क्षणा के लिए दगा दे रहे हों ।

आगामा शनिवार के दिन एक मिशन मुझे हिन्दू धर्म की दीक्षा दगा । उसी दिन शाम को हम लोग की गादी है ।

आंखा से चश्मा उतारकर मज पर रखत रखत माहव न पूछा 'मेरे यहाँ आने की जरूरत क्या पड़ी, जब यह बताए ?

इस गादी में युवराज के पिता की रजामंदी नहीं है । हाँ बता यह भी नहीं जानते कि आगामा शनिवार को हम लोगों की गादी है । आजकल किसी पर पूरा यकीन नहीं होता । किन्तु यदि कुछ दिन बाद वाप के दवाब में युवराज इस गादी को नामजूर कर दें तो अभी से दवाब लिए क्या कर सकती हूँ ? —और एक बात । युवराज मुझे ईसाई ही समझते हैं । लेकिन अब मैं ईसाई हूँ या मुसलमान ? आभा स्टुअट का आवाज फिर कुछ बेसुरी सी लगी ।

कानूनदा के लिए यह कोई बड़ा मवाल नहीं था। साहब जाने 'पहले तो गादी के बाद मिशन से सर्टिफिकेट तना न भूलें। आगे चलकर गादा के सबूत में वही आपकी सबसे ज़रिफ़ सनीय दलील होगी। हमारे आपन जब हिंदू धर्म ग्रहण कर लिया तो त्रिदिचयन थी या भुसतमान इसमें कुछ नहीं जाता जाता। अभी तो मरी यही सलाह है। भविष्य में कोई नउ घटना घटे तो मरी मदद के बारे में आप निश्चिन्त रहें।'

जाना स्टुडेंट के बाहर चले जाने के बाद भी साहब कुछ देर तक चप बटे रहे। अनुभव के कोप में जा नई उद्विग्न हुई, उसी को सायद मन के किसी काम में सम्हालकर रख रहे थे।

फिर कुछ देर के बाद और मरे कंधे पर एक चपत लगाकर बाल 'अचरत होता है तुम्ह, ठीक है न? कुछ ठहरकर फिर बोले 'तुम्हारी जिदगी तो अभी शुरू हुई है। आप और जान खाना ही की खूब सजग रहो दुनिया में बहुत सी अजीब चीज़ें देखोगे-सुनोगे।

मैं हा, ना कुछ नहीं जाता चुपचाप बैठा रहा।

"तुम्हारे परिवार में गान्धी से कुछ दिन पहले ही लडकी का बेव्रित कर अनेक नेग जॉर्जि हान हैं न? हमारे देश में भी माना कुछ मोचन साचते साहब बोल रहे थे, 'लडकी तब साचती है कि वह कितनी भाग्यवती है उसी को बेव्रित कर सारे नेग मनाए जा रहे हैं। बिल्कुल जिस लडकी का अपनी माँ की का इतना भी खुद ही करना पड़ और कानूनी सलाह करन हमारे पास दौड़ना भी पड़े वह बेचारी "

अगले रविवार को क्या-काम हाने से मुझे हानल में फिर जाना पड़ा। छुट्टी के दिन साहब का स्वभाव ही बदल जाता था। बर्मिंघम के कान गाउन के भाँवर छिपा मश प्रमन रमिन मन श्तवार को मौका देखकर बाहर जा जाता। उस दिन काम से वही ज्यादा मप गप होनी। अग्रता के यहाँ काम और गपवाजी का रिश्ता जठ और बढ़ का है। साहब मज में बान रहे थे, "अग्रेज जहाँ जॉर्जि सालता है उसके इंद गिद चार पाँच मील तक किसी कलव की मुशबू तक नहीं होती। त्रेडिन इतवार का मैं पूरा फायदा हो जाता हूँ। उनसे यहाँ ता आक्सिस में ही आना पर्दा टांगकर गप गप करने का प्रबंध रहता है।'



गाम का चाय क टेबल पर साहब बात कर रहे हैं मुन रहा था । इसी समय बजरा ने हाथ में स्निग्ध दखर जताया कि रानी मांग आन्ध्र नारायण साहब से मिलना चाहती हैं ।

ऐसा जदभुन नाम बभा नहीं सुना था । साहब इस गंग क निवासी न हान पर भी भारतीय गामा के भूठाघों से परिचित थे । कौन से मुमुक्षु बुलीन हैं ? उत्तर और दक्षिण रानी भ भव क्या है ? गायल उपाधि की उपज सिन्धु में हुई थी या राजपूताना में ? इत्यादि सवाल उठन पर व एक दज भट्टाचार्यों को भी हरा सता दे । किन्तु व भी इस नाम से कुछ न समझ सके ।

सारा उस्मुक्ता मिटानर जो महिला जदर आइ वह ओर कोई नहीं हमारी यहा युराज प्रिया ही थीं । गर्रा रंग की सितकी साडी से उनका गहरा परिवर्णित था । मांग में लाल लाल गिद्धर । एम स्निग्ध और सौम्य रूप में तो आभा स्तुज का किसी निन नहीं दखा था ।

मीरा नाम आपका कसा गगता है ? कुमों पर बठन ही वह पूछने लगी ।

‘गुब अच्छा है साहब ने मिर हिसार उतर लिया ।

बहुत साचवर यह गाम पगल लिया है जीर आन्ध्रनारायण मर पति की वगगत उपाधि है ।

‘मास्ट इन्टरेस्टिंग साहब ने बजरा का और एम रूप जान का प्यारा बरन व बाद पूछा, ‘काद नई गबर है क्या रानी साहबा ?

गना निगल रही । धारे सीरे उन चेतरे की कानि बिना नेन गी । अक्स्मात रानी बहुत थकी-सी जान पड़ी । चाय का प्याग दूर हटा कर आहिस्ते बोनी, ‘बहुत चितित हू । आपस कहा था न मर यमुर इम गाना में राजी उही हैं । अब व भुम इन्धिया में बाहर निवाता की चप्पा कर रहे हैं । यहाँ की गिक्यारिटी पुतिम का व

गम्भीरता में साहब ने जवाब दिया, हाँ तब तो चितनीय दान है । गिक्यारिटा पुनिम चाहता किसी भी त्रिदशी का यहाँ में बाहर निगान सकती है ।

अब क्या हाथा ? आप ही इस परल्लभ में मरे एकमात्र हमल्ल हैं ।